पाठ 4

बंदरबाँट

आपस की लड़ाई का परिणाम बुरा होता है। यदि उस लड़ाई का फैसला किसी चालाक आदमी को करने को दे दिया जाए तब तो स्थिति और बिगड़ जाती है। एक रोटी के लिए दो बिल्लियों में झगड़ा हुआ। बंदर ने उसका फैसला किया। दोनों बिल्लियों को उस रोटी से हाथ धोना पड़ा, इसलिए हमें आपस में मिल–जुलकर रहना चाहिए। झगड़ा हो तो आपस में ही निपटारा करना चाहिए।

(म्याऊँ–म्याऊँ की आवाज़ होती है। एक ओर से काली बिल्ली और दूसरी ओर से सफेद बिल्ली प्रवेश करती है।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहिन, नमस्ते।

सफेद बिल्ली : नमस्ते बहिन, नमस्ते।

काली बिल्ली : अच्छी तो हो?

सफेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ।
खाने को कुछ ढूँढ़ रही हूँ।

काली बिल्ली : उसी खोज में मैं भी निकली।

सफेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफेद बिल्ली : रखी मेज पर है वो रोटी
लपकूँ? कोई आ जाए तो ......

काली बिल्ली : तू डर; मैं तो लेने को जाती हूँ।
(काली बिल्ली लपकती है और रोटी लेकर भागने लगती है।)

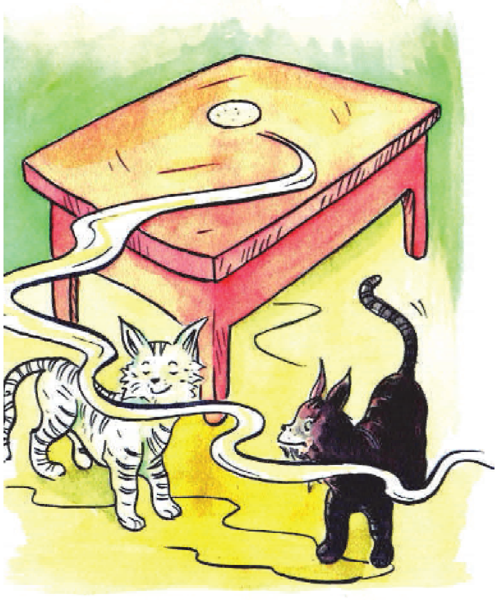

सफेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है,
रोटी लेकर, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी तेरी! कैसे तेरी? रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं न दिखाती तो तू जाती?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती?
जा, डरपोक कहीं की; जा भग, रोटी मेरी।

सफेद बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

(दोनों झगड़ती हैं, 'रोटी मेरी, रोटी मेरी' कहकर एक दूसरी पर गुर्राती हैं।)

(बंदर का प्रवेश)

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड़ रही हो?

तुम कहती हो रोटी मेरी। (सफेद बिल्ली से)

तुम कहती हो रोटी मेरी। (काली बिल्ली से) रोटी किसकी?

मैं इसका फैसला करूँगा।

चलो कचहरी, मेरे पीछे–पीछे आओ।

(बंदर रोटी छीनकर अपने हाथ में लेकर चलता है। दोनों बिल्लियाँ बंदर के पीछे–पीछे जाती हैं।)

(दूसरा दृश्य – बंदर की कचहरी)

(बंदर मेज पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है।

दोनों बिल्लियाँ मेज के सामने इधर– उधर खड़ी हैं।)

बंदर : बोलो तुमको क्या कहना है?

सफेद बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैंने ही रोटी देखी थी, इससे रोटी पर पूरा हक मेरा बनता।

बंदर : *(काली बिल्ली से)*

बोलो, तुमको क्या कहना है?

काली बिल्ली : श्रीमान्! पहले मैं झपटी थी रोटी लेने, इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता।

बंदर : बात बराबर, बात बराबर।

है मेरा फैसला कि रोटी तोड़–तोड़कर

तुम्हें बराबर दे दी जाए।

मेरे पास धरमकाँटा है।

(बंदर मेज के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। रोटी को दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और तराजू उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : यह टुकड़ा, कुछ भारी निकला।
इसमें से थोड़ा खाकर के हल्का कर दूँ। *(खाता है।)*
(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो जाता है, दूसरा ऊपर।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।
अब इसको थोड़ा खा करके हल्का कर दूँ।
(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर हो जाता है, दूसरा नीचे।)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।
मुँह थक गया बराबर करते
और तराजू उठा–उठाकर हाथ थक गया।
(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल जाता है।)

सफेद बिल्ली : आप थक गए,
अब न उठाएँ और तराजू।

काली बिल्ली : बचा–खुचा जो हमको दे दें।
हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं तुम फिर झगड़ोगी।
मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ।
बचा–खुचा भी खा लेता हूँ।
(इतना कहकर बंदर बची–खुची रोटी भी खा जाता है और तराजू लेकर भाग जाता है।)

दोनो बिल्लियाँ: आपस में झगड़ा करने से, हाथ नहीं कुछ आता।
जैसे बंदर चालाकी से, रोटी है खा जाता।

शब्दार्थ

महक = सुगंध

कचहरी = न्यायालय

धरमकाँटा = एक विशेष प्रकार की तौलने की मशीन जिस पर बहुत भारी वस्तुएँ, जैसे–ट्रक आदि तौले जाते हैं। यहाँ इसका अर्थ है 'तराजू'।

नीचे लिखे शब्दों के अर्थ कोष्ठक में से छाँटकर खाली स्थान में लिखो।

हक – ————————

पलड़ा – ————————

हड़पना – ————————

(तराजू का पल्ला, दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना, अधिकार)

प्रश्न और अभ्यास

प्र.1. कहानी का शीर्षक बंदर बॉट क्यों है ?

प्र.2. तुम इस नाटक को क्या नाम देना चाहोगे और क्यों ?

प्र.3. सफेद बिल्ली और काली बिल्ली दोनों रोटी पर अपना हक क्यों जता रहीं थी?

प्र.4. बंदर ने दोनों बिल्लियों से क्या कहकर स्वयं उनका फैसला करने की बात कही?

प्र.5. बंदर ने बिल्लियों के झगड़े का क्या निर्णय दिया?

प्र.6. सोचकर लिखो कि अगर बंदर न आता तो बिल्लियाँ अपना झगड़ा कैसे निपटातीं।

प्र.7. बिल्लियाँ यदि बंदर से फैसला कराने से मना कर देतीं तो क्या होता?

प्र.8. अगले दिन दोनों बिल्लियों को एक तरबूज मिला। दोनों सोंचने लगीं इस तरबूज को कैसे बाँटा जाए ? तभी फिर से बंदर आ गया। आगे क्या हुआ होगा?

प्र.9. नीचे लिखे वाक्यों में से जो वाक्य सही हों, उनके सामने 'सत्य' और जो गलत हों, उनके सामने 'असत्य' लिखो।

क– रोटी पहले सफेद बिल्ली ने देखी। ( )

ख– रोटी सफेद बिल्ली ने ही पहले लपकी। ( )

ग– सफेद बिल्ली ने काली बिल्ली को डरपोक कहा। ( )

घ– दोनों बिल्लियों ने बंदर से फैसला करने को कहा। ( )

ङ– बंदर ने तराजू पर रोटी के टुकड़े तौले। ( )

प्र.10. इन पंक्तियों को कविता के रूप में लिखो।

क. मेरा फैसला है कि रोटी तोड़–तोड़कर तुम्हें बराबर–बराबर दी जाए।

ख. तुम दोनों झगड़ क्यों रही हो ?

भाषा–अध्ययन एवं व्याकरण

- शिक्षक पाठ के किसी एक अनुच्छेद को श्रुतिलेख के रूप में बोलें और विद्यार्थी लिखकर परस्पर अभ्यास–पुस्तिकाओं का परीक्षण करें।

प्र.1 निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में से सही शब्द छाँटकर लिखो।

मुंह/मुँह, उठाँए/उठाएँ, तोड/तोड़, खुद/खूद।

प्र.2 नीचे लिखे शब्दों का अर्थ लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

महक, हक, पलड़ा, पछताना, बचा–खुचा।

प्र.3 दिए गए शब्दों का प्रयोग करते हुए नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों की पूर्ति करो।

डरपोक, लपक ली, पलड़े, न्यायालय ।

क– हमारे झगड़ों का न्याय .... में होता है।

ख– तराजू के .... सम पर आने चाहिए।

ग– जो .... होते हैं, वे युद्ध–क्षेत्र से भागते हैं।

घ– चेतन ने बॉल को शॉट मारा लेकिन मोहिंदर ने बॉल ....।

पढ़ो, समझो और लिखो

मैं खाना खाऊँगा। फिर विद्यालय जाऊँगा।
इन दो वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य इस प्रकार लिखा जा सकता है –
मैं खाना खाकर विद्यालय जाऊँगा।

प्र.4. नीचे वाक्यों के जोड़े दिए गए हैं। दोनों वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य बनाओ।

क. काली बिल्ली ने रोटी ली। फिर वह भागी।

ख. कचहरी चलो। मैं वहाँ न्याय करूँगा।

प्र.5. नीचे पहली पंक्ति में लिखे शब्दों की लय से मिलते–जुलते दो–दो शब्द तालिका में से छाँटकर लिखो।

झपटी, रोटी, नाक, थोड़ा, धरम, कहना, बंदर,
सहना, चरम, खाक, सुंदर, अंदर, लिपटी, कोड़ा,
खोटी, घोड़ा, कपटी, करम, डाक, बोटी, बहना ।

रचना

शिक्षक की मदद से इस नाटक को संक्षेप में कहानी के रूप में लिखो।

योग्यता विस्तार

1. अपने साथियों की सहायता से बिल्ली और बंदर का रूप बनाकर, इस पाठ का अभिनय करो ।
2. आपस में लड़ाई का क्या परिणाम होता है, इस पर कक्षा में बातचीत करो।
3. बंदर ने जो न्याय किया, क्या वह उचित था ? तुम यदि न्याय करते तो क्या फैसला देते ?
4. यह कविता भी पढ़ो–

   दो बिल्ली एक रोटी लाई, पर दो टुकड़े कर नहीं पाई।
   बंदर एक वहाँ पर आया, दोनों को उसने समझाया;
   लड़ना छोड़ तराजू लाओ, तौल बराबर रोटी खाओ।
   बिल्ली दौड़ तराजू लाई, लगा तौलने बंदर भाई।
   भारी पलड़े से कुछ टुकड़ा, लगा डालने अपने मुखड़ा।
   इसी तरह सब रोटी खाई, बिल्ली बैठ रहीं ललचाई।
   बोलीं आपस में तब बिल्ली, लड़ना छोड़ चलें अब दिल्ली।

3LLFYW

शिक्षण–संकेत

- पाठ को कहानी के रूप में परिवर्तित कर बच्चों को सुनाएँ।
- बच्चों से कहानी के पात्रों के अनुसार अभिनय कराएँ।
- सरल प्रश्न पूछें तथा उत्तर देने के लिए बच्चों को प्रेरित करें।